AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता पर ई–लर्निंग के प्रभाव का अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. पूजा दुबे

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
संत हरकेवल शिक्षा महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

किशोरावस्था संघर्ष एवं तूफान का काल माना जाता है। इस अवस्था में किशारों के संवेगों में स्थिरता नहीं रहती क्योकि इस समय उनमें कई शारीरिक और मानसिक परिवर्तन हो रहे होते है। भावनात्मक स्थिरता चार सोपानों से होकर गुजरती है :– अस्तित्व, सुरक्षा, सफलता और शांति। इसके लिये किशोर हमेशा तत्पर रहता है। इस दौरान किशोरो पर समाज में चल रहे दौर का प्रभाव भी देखने को मिलता है। कोविड–19 महामारी के दौरान हमने शिक्षा जगत में एक बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिला वह था ई–लर्निंग का। ई–लर्निंग की सहायता से हम शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को साकार करने का प्रयास कर रहे थे। ई–लर्निंग के माध्यम से हम किशोरों को नवीनतम जानकारी प्रदान कर शिक्षा को मनोरंजन और रोचक बनाने का कार्य करते है। ई–लर्निंग के माध्यम से जो छात्र स्थान परिवर्तन कर शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते उनके लिये बहुत लाभप्रद है। एक अच्छे कैरियर के निर्माण के लिय आज माता–पिता अपने बच्चों को ई–लर्निंग के द्वारा भी दुरस्थ शिक्षा पद्धति हेतु आकृष्ट करते है। शोध में हमने देखा किशोर ई–लर्निंग के माध्यम से किशोरों को सैद्धांतिक ज्ञान तो प्राप्त हो रहा है लेकिन व्यवहारिक ज्ञान से वह दूर होते चले गयें। किशोरों के आत्मसम्मान को बढाने और संवेंगों को परिपक्वता बनाने के लिए व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता है जिससे वे अपने आप को किसी भी परिस्थिति में समायोजित कर सके।

मुख्य शब्द

किशोर, सीखना, ई–लर्निंग.

प्रस्तावना

मनुष्य के सीखने की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती है। किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जब किशोरों में अनेको शारीरिक एवं मानसिक परिर्वतन होते है जिसका सीधा प्रभाव संवेगों पर पड़ता हैं। किशोरों के संवेगों पर ई–लर्निंग का प्रभाव बहुतायत देखने को मिलता है। किशोर ई–लर्निंग के माध्यम से अपनी सुविधानुसार सीखते है। जब चाहे जहाँ चाहे, जैसे चाहे वैसे सीखता है। किशोर अपने ''आराम क्षेत्र'' को नहीं छोड़ते। जिसका सीधा–सीधा प्रभाव किशोरां के संवेगों पर पड़ता है। किशोरों के संवेग उस सीमा तक नहीं प्राप्त कर पाते जितना हम जब व्यवहारिक रूप से सीख कर संवेगात्मक परिपत्वकता को प्राप्त करते है।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध अध्ययन में किशोर बालकों को संवेगात्मक परिपक्वता पर ई–लर्निंग के पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की जायेगी वहीं दूसरी ओर ई–लर्निंग के द्वारा किशोरों में चिंतनशीलता समस्या समाधान आदि में आने वाली कठिनाईयों की जानकारी प्राप्त की जायेगी। किशोरों के संवेगों के परिपक्वता बनाने के लिये अपने शोध कार्य में नवीनतम के सत्य विश्लेषण कर प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा। इस का उपयोग शोध ही नहीं अपितु पूरे देश को इसका लाभ होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

1. किशोर विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर का विश्लेषण करना।
2. किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर ई–लर्निंग के प्रभाव का आंकलन।

शोध परिकल्पना

1. किशोरावस्था विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर को प्रभावित करता है।
2. किशोरावस्था, विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर ई–लर्निंग को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता हे।

शोध प्रविधि

1. **शोध डिजाईनः** यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है।
2. **नमुना चयनः** किशोरावस्था के 100 किशोरो का चयन किया गया। सरगुजा जिले के अम्बिकापुर शहर 10 स्कूल से 100 किशोरों को लिया गया।

आंकडो का संकलन

1. **प्राथमिक समंकः** प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से।
2. **द्वितीयक समंकः** शोध अध्ययन और पुस्तक।

आँकड़ों का विश्लेषण

सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर डेटा का विश्लेषण किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. क्या आपको ई–लर्निंग के प्रयोग में असहजता महसूस होती है?

हॉ – 20 प्रतिशत **नहीं** – 50 प्रतिशत **कभी कभी** – 30 प्रतिशत

व्याख्याः 20 प्रतिशत किशोरों को ई–लर्निंग के प्रयोग में असहजता महसूस होती है। ई–लर्निंग के प्रयोग में 50 प्रतिशत किशोर अपने आप को सहज महसूस करते है। 30 प्रतिशत किशोर कभी–कभी असहज महसूस करते है।

2. क्या आप अपनी कठिन परिस्थितियों में ई–लर्निंग के प्रयोग के माध्यम से अपने संवेंगों को स्थिर कर पाते है।

हॉ – 20 प्रतिशत **नहीं** – 45 प्रतिशत **कभी कभी** – 35 प्रतिशत

व्याख्याः 20 प्रतिशत किशोर कठिन परिस्थति में ई–लर्निंग के प्रयोग के माध्यम से अपने संवेगों को स्थिर कर पाते है। 35 प्रतिशत किशोर कभी–कभी अपने संवेगों का प्रयोग कठिन परिस्थतियों में प्रयोग कर संवेगो को स्थिर कर पाते है। कठिन परिस्थितियों में ई–लर्निंग के प्रयोग के माध्यम से 45 प्रतिशत किशोर अपने संवेगें को स्थिर नहीं कर पाते,

3. क्या आप ई–लर्निंग का प्रयोग करने से ज्यादा थका हुआ महसुस करते है?

हॉ – 45 प्रतिशत **नहीं** – 35 प्रतिशत **कभी कभी** – 20 प्रतिशत

व्याख्याः ई–लर्निंग के प्रयोग से 45 प्रतिशत किशोर अपने आप को ज्यादा थका महसूस करते है, 35 प्रतिशत किशोर ई–लर्निंग के प्रयोग से अपने आप को ज्यादा थका महसूस नहीं करते। 20 प्रतिशत किशोर ई–लर्निंग का प्रयोग करने से कभी–कभी अपने आप को थका महसूस करते है।

4. क्या ई–लर्निंग से प्राप्त ज्ञान से आपकी काल्पनिक तरंगे स्थिर हो जाते है?

हॉ – 25 प्रतिशत **नहीं** – 55 प्रतिशत **कभी कभी** – 20 प्रतिशत

व्याख्याः ई–लर्निंग से प्राप्त ज्ञान से 25 प्रतिशत किशोर अपनी काल्पनिक तरंगें स्थिर कर पाते है। 55 प्रतिशत किशोर ई–लर्निंग से प्राप्त ज्ञान से अपनी काल्पनिक तरंगे स्थिर नहीं कर पाते, तथा 20 प्रतिशत किशोर ई–लर्निंग से प्राप्त ज्ञान से अपने काल्पनिक तरंगे कभी–कभी स्थिर पर पाते है।

5. क्या ई–लर्निंग से प्राप्त अनुभव आपकों व्यवहारिक रूप से परिपक्व करता है?

हॉ – 10 प्रतिशत **नहीं** – 55 प्रतिशत **कभी कभी** – 35 प्रतिशत

व्याख्याः 10 प्रतिशत किशोर ई–लर्निंग से प्राप्त अनुभव से व्यवहारिक रूप से परिपक्व कर पाते है। 55 प्रतिशत किशोर ई–लर्निंग से प्राप्त अनुभव से अपने आप को व्यवहारिक रूप से परिपक्व नहीं कर पाते, तथा 35 प्रतिशत किशोर ई–लर्निंग से प्राप्त अनुभव अपने आप को व्यवहारिक रूप से परिपक्व कभी कभी कर पाते है।

निष्कर्ष

किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जिसमें किसी भी माध्यम का प्रभाव तीव्रता से नहीं पड़ता है। इस अवस्था में किशोर अनेक परिवर्तन से होकर गुजरता है। ई–लर्निंग का प्रभाव किशोरों पर पड़ता है, ई–लर्निंग के माध्यम से किशोर अपने आराम क्षेत्र को बिना छोड़े डिग्री हासिल करता है जिससे उसे व्यवहारिक ज्ञान नहीं मिल पाता और किशोर संवेगात्मक रूप से परिपक्वता नहीं होता है जिससे भविष्य में अनेक प्रकार के समस्या से ग्रस्त होता है। दूर दराज के इलाकें या ऐसी जगह जहॉ से विद्यार्थी विशेष शाला का अध्ययन केन्द्र में जाकर ज्ञान हासिल नहीं कर पाते उनके लिये ई–लर्निंग एक अच्छा प्लेटफार्म है। ई–लर्निंग से प्राप्त ज्ञान का प्रयोग व्यवहारिक रूप से अपने जीवन को प्रभावपूर्ण तरीके से जीवनयापन करते है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, देवकी नंदन (2017) शिक्षक प्रशिक्षक, महा. के छात्राध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन, International journal research thought, vol-5, Issue 1, p. 14-18, ISSN : 2320-2882.
2. बंसल, सोनबेर (2007) *अधिगतकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगत प्रक्रिया,* सोनबेर एम.आई.जी.–7, जनता कालोनी, लखोसी, राजनांदगॉव।
3. कुमार, अशोक; एवं कंशल, हरिश (2018) किशोरावस्था के बालक–बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर माता–पिता के संबंधों का प्रभाव का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन रिसर्च,* वॉल्यूम–3, इश्यू 2, पृ. 74–78।

––==00==––